ब्रह्मशान्ति यक्ष

मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी

जैन परम्परा में २४ जिनों (या तीर्थङ्करों) के शासनदेवताओं के रूप में २४ यक्ष-यक्षी युगलों का निरूपण हुआ है। जैन देवकुल में जिनों के पश्चात् उनसे सम्बद्ध यक्ष-यक्षी युगलों को सर्वाधिक प्रतिष्ठा मिली। २४ यक्ष-यक्षी युगलों के अतिरिक्त जैन परम्परा में कुछ अन्य यक्ष भी लोकप्रिय रहे हैं, जिनमें ब्रह्मशान्ति का महत्त्व सर्वाधिक है। ब्रह्मशान्ति यक्ष के प्राचीनतम उल्लेख ल० ९वीं–१०वीं शती ई० के श्वेताम्बर ग्रन्थों में प्राप्त होते हैं। दिगम्बर परम्परा में ब्रह्मशान्ति यक्ष का उल्लेख नहीं है, इसी कारण दिगम्बर सम्प्रदाय में उनकी मूर्तियाँ भी नहीं बनीं। श्वेताम्बर और दिगम्बर परम्परा में १० वें जिन शीतलनाथ के चतुर्मुख तथा पद्म पर आसीन और आठ या दस भुजाओं वाले ब्रह्म यक्ष का उल्लेख हुआ है, पर लाक्षणिक विशेषताओं की दृष्टि से ब्रह्म यक्ष ब्रह्मशान्ति से सर्वथा भिन्न है। दक्षिण भारत के दिगम्बर सम्प्रदाय में भी ब्रह्मदेव-स्तम्भ तथा ब्रह्मयक्ष की परम्परा है, किन्तु स्वरूप की दृष्टि से ब्रह्मदेव ब्रह्मशान्ति से पूरी तरह अलग है।[1] ब्रह्मशान्ति यक्ष की उत्पत्ति, उसके पूर्वभव एवं प्रतिमालक्षणों की चर्चा उमाकान्त शाह ने "ब्रह्मशान्ति यक्ष" शीर्षक लेख में विस्तार से की है।[2]

ब्रह्मशान्ति यक्ष के पूर्वभव की कथा सर्वप्रथम जिनप्रभसूरिकृत **कल्पप्रदीप** (१४ वीं शती ई०) के "सत्यपुरतीर्थकल्प" में दी गई है।[3] ग्रन्थ के अनुसार ब्रह्मशान्ति यक्ष (बंभसंतिजक्ख) पूर्वभव में शूलपाणि यक्ष था, जिसने महावीर की तपस्या में अनेक प्रकार के कठिन उपसर्ग उपस्थित किये थे। उपसर्ग का कोई असर न होने के बाद शूलपाणि यक्ष महावीर का भक्त बन गया और उसी समय से उसे ब्रह्मशान्ति यक्ष कहा जाने लगा। प्रारम्भिक ग्रन्थों में शूलपाणि यक्ष के कई उल्लेख प्राप्त होते हैं, किन्तु उनमें कहीं भी उसका ब्रह्मशान्ति यक्ष से सम्बन्ध नहीं बताया गया। इस आधार पर उमाकान्त शाह ने जो माना है कि जिनप्रभसूरि ने शूलपाणि और ब्रह्मशान्ति यक्षों की दो अलग-अलग परम्पराओं को मिला दिया था,[4] यह उचित ही है।

उपलब्ध प्रमाणों से ब्रह्मशान्ति यक्ष की परम्परा को ९वीं–१०वीं शती ई० के पूर्व नहीं ले जाया जा सकता है। ब्रह्मशान्ति यक्ष का निरूपण सबसे पहले **निर्वाणकलिका** (पादलिप्तसूरि III कृत, ल० ९०० ई०) एवं **स्तुतिचतुर्विंशतिका** (शोभनमुनिकृत, ल० ९७३ ई०) में हुआ है। जिनप्रभसूरि के अनुसार वि० संवत् १०८१ (= ई० १०२४) में सत्यपुर (सच्चउर-साचौर, राजस्थान) में

---

१. द्रष्टव्य, शाह, यू० पी०, "ब्रह्मशान्ति ऐण्ड कपर्दी यक्षज," **जर्नल आफ एम० एस० युनिवर्सिटी ऑव बड़ौदा**, खं० ७, अं० १, मार्च १९५८, पृ० ६३-६५।

२. **वही**, पृ० ५९-६५।

३. **विविधतीर्थकल्प**, (जिनप्रभसूरिकृत), सम्पा० जिनविजय, भाग १, सिंघी जैन ग्रन्थमाला—१०, शान्तिनिकेतन (बङ्गाल), १९३४, पृ० २८-३०।

४. शाह, यू० पी०, **पूर्वनिर्दिष्ट**, पृ० ६२-६३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ब्रह्मशान्ति यक्ष विद्यमान थे।[1] पाल्हणपुत्र के **आबुरास** (सं० १२८९ = ई० १२३३) में भी मोढेरा (महेसाणा, उ० गुजरात) में ब्रह्मशान्ति यक्ष के पूजन का उल्लेख है। घाणेराव (पाली, राजस्थान) के महावीर मन्दिर (१० वीं शती ई०), कुम्भारिया (बनासकांठा, गुजरात) के महावीर और शान्तिनाथ मन्दिरों (११वीं शती ई०), सेवाणी (पाली, राजस्थान) के महावीर मन्दिर (११ वीं शती ई०), देलवाड़ा (सिरोही, राजस्थान) के विमलवसही (रङ्गमण्डप-भ्रमिका-१२वीं शती उत्तरार्ध ई०) और लूणवसही (१२३१ ई०) एवं ओसियां (जोधपुर, राजस्थान) की पूर्वी जैन देवकुलिका (११ वीं शती ई०) की ब्रह्मशान्ति यक्ष की मूर्तियाँ भी १०वीं से १३वीं शती ई० के मध्य श्वेताम्बर स्थलों पर ब्रह्मशान्ति की लोकप्रियता की साक्षी हैं।

निर्वाणकलिका में जटामुकुट, पादुका एवं उपवीत से शोभित, बड़े एवं तीक्ष्ण दांतों तथा भयङ्कर दर्शन वाले ब्रह्मशान्ति को चतुर्भुज कहा गया है। भद्रासन पर विराजमान यक्ष के दक्षिण करों में अक्षमाला और दण्ड तथा वाम हस्तों में छत्र और कमण्डलु दरशाया गया है।[2] शोभनमुनि की **स्तुति-चतुर्विंशतिका** में भी ब्रह्मशान्ति का चतुर्भुज स्वरूप ही विवेचित है। यक्ष के करों के आयुध **निर्वाणकलिका** के ही समान हैं।[3]

घाणेराव के महावीर मन्दिर की चतुर्भुज मूर्ति (दक्षिण का वेदिबन्ध) ब्रह्मशान्ति यक्ष की ज्ञात मूर्तियों में प्राचीनतम है। यक्ष के हाथों में वरदाक्ष, चक्राकार पद्म, छत्र और जलपात्र हैं।[4] किञ्चित् घटोदर एवं श्मश्रु और जटामुकुट से युक्त ब्रह्मशान्ति ललितमुद्रा में पद्म पर आसीन हैं।[5] ओसियां के महावीर मन्दिर के समीप की पूर्वी जैन देवकुलिका (दक्षिण का वेदिबन्ध) पर भी चतुर्भुज ब्रह्मशान्ति की मूर्ति है (चित्र १)। श्मश्रु और जटाजूट से शोभित तथा किञ्चित् घटोदर

---

१. **विविधतीर्थकल्प**, पृ० २९, लाइन २१-२३।

२. ब्रह्मशान्ति पिंगवर्णं दंष्ट्राकरालं जटामुकुटमण्डितं
पादुकारूढं भद्रासनस्थितमुपवीतालंकृतस्कन्धं चतुर्भुजं
अक्षसूत्रदण्डकान्वितदक्षिणपाणि कुण्डिकाछत्रालंकृतवामपार्णि चेति ॥
—**निर्वाणकलिका २१. १।**
(सम्पा० मोहनलाल भगवानदास, मुनि श्रीमोहनलालजी जैन ग्रन्थमाला ५, बम्बई, १९२६, पृ० ३८)

३. दण्डच्छत्रकमण्डलूनि कलयन् स ब्रह्मशान्तिः क्रियात्
सन्त्यज्यानि शमी क्षणेन शमिनो मुक्ताक्षमाली हितम् ॥
तप्ताष्टापदपिण्डपिंगलरुचिर्योऽधारयन्मूढतां
संत्यज्यानिशमीक्षणेन शमिनो मुक्ताक्षमालीहितम् ॥
—**स्तुतिचतुर्विंशतिका १६. ४।**
(सम्पा० एच० आर० कापडिया, बम्बई, १९२७).

४. इस लेख में यक्ष के हाथों के आयुधों की गणना निचले दाहिने हाथ से प्रारम्भ करके घड़ी की सूई की गति के क्रम में की गयी है।

५. द्रष्टव्य, ढाकी, एम० ए०, "सम अर्ली जैन टेम्पल्स् इन वेस्टर्न इण्डिया", **श्री महावीर जैन विद्यालय गोल्डेन जुबिली वाल्यूम**, बम्बई, १९६८, पृ० ३३२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ब्रह्मशान्ति ललितमुद्रा में भद्रासन पर विराजमान हैं। आसन के समीप हंसवाहन उत्कीर्ण है। उनके करों में वरदमुद्रा, स्रुक, पुस्तक एवं जलपात्र हैं।[१]

ब्रह्मशान्ति की सर्वाधिक मूर्तियाँ कुम्भारिया और देलवाड़ा के जैन मन्दिरों में हैं। ब्रह्मशान्ति के साथ हंस और गजवाहनों के अङ्कन के प्रथम दृष्टान्त इन्हीं स्थलों पर मिलते हैं। कुम्भारिया के महावीर और शान्तिनाथ मन्दिरों (नवचौकी एवं भ्रमिका वितान) में कुल पाँच मूर्तियाँ हैं।[२] ब्रह्मशान्ति के निरूपण में स्वरूपगत विविधता इसी स्थल पर दृष्टिगत होती है। सभी उदाहरणों में ब्रह्मशान्ति कुम्भोदर और चतुर्भुज तथा ललितमुद्रा में स्थित एवं दाढ़ी और मूँछों से युक्त हैं। एक अपवाद के सिवाय वाहन के रूप में यहाँ हमेशा गज का अङ्कन हुआ है। महावीर मन्दिर की पश्चिमी भ्रमिका के एक वितान पर अङ्कित ऋषभनाथ के जीवनदृश्यों में गोमुख यक्ष और अम्बिका यक्षी के साथ ब्रह्मशान्ति भी उत्कीर्ण है (चित्र २)। भद्रासन पर विराजमान ब्रह्मशान्ति के आसन के समक्ष हंस तथा करों में वरदमुद्रा, पद्म, पुस्तक एवं जलपात्र हैं। अन्य चार उदाहरणों में करण्ड-मुकुट, छन्नवीर, उपवीत आदि से मण्डित यक्ष के हाथों में वरद् (या वरदाक्ष), छत्र, पुस्तक और जलपात्र (या फल) हैं (चित्र ३)। शान्तिनाथ मन्दिर की पश्चिमी भ्रमिका के वितान की मूर्ति में पुस्तक ऊर्ध्व दक्षिण कर में है और वाम करों में छत्र और पद्म प्रदर्शित हैं।[३]

विमलवसही में ब्रह्मशान्ति की तीन मूर्तियाँ हैं।[४] इनमें यक्ष चतुर्भुज और षड्भुज हैं। चतुर्भुज मूर्तियाँ देवकुलिका ५४ के समक्ष की भ्रमिका तथा नवचौकी के वितानों पर उत्कीर्ण हैं। पहले उदाहरण में ब्रह्मशान्ति की मूर्ति सुपार्श्वनाथ की मूर्ति के ऊपर अङ्कित है। घटोदर और श्मश्रुयुक्त ब्रह्मशान्ति यहां ललितासन में हैं और उनके करों में वरद्, पद्म, पुस्तक और जलपात्र हैं। भद्रासन पर विराजमान यक्ष के पार्श्वों में दो चामरधारिणियों का भी अङ्कन हुआ है। दूसरी मूर्ति में भी यक्ष भद्रासन पर ललितमुद्रा में आसीन हैं और उनके हाथों में अक्षमाला, पुस्तक, छत्र और

---

१. महावीर मन्दिर (८वीं शती ई०) के गूढ़मण्डप पर दो ऐसी द्विभुज स्थानक मूर्तियाँ हैं, जिनकी ठिगनी शरीर रचना तथा उनका घटोदर एवं यज्ञोपवीत से युक्त होना, उनके ब्रह्मशान्ति यक्ष होने की सम्भावना व्यक्त करता है। इन मूर्तियों के करों में जलपात्र और पुस्तक प्रदर्शित हैं।

२. शान्तिनाथ मन्दिर की भ्रमिका एवं नवचौकी के वितानों, और नवचौकी की पीठ पर यक्ष की तीन, तथा महावीर मन्दिर के पूर्व और पश्चिम की भ्रमिका के वितानों पर दो मूर्तियाँ हैं।

३. शान्तिनाथ मन्दिर की पश्चिमी भ्रमिका के एक वितान की मूर्ति में ब्रह्मशान्ति महावीर के जीवनदृश्यों के मध्य उत्कीर्ण हैं। यहाँ ब्रह्मशान्ति के साथ यक्षी भी आमूर्तित है। सम्भव है यह महावीर के यक्ष-यक्षी का अङ्कन हो। महावीर के पारम्परिक यक्ष (मातङ्ग) के स्थान पर यहाँ ब्रह्मशान्ति का अङ्कन स्वतन्त्र यक्ष के साथ ही ब्रह्मशान्ति की महावीर के यक्ष के रूप में कुम्भारिया में निरूपण की परम्परा को भी स्पष्ट करता है।

४. सादरी स्थित पार्श्वनाथ (पूर्वी शिखर) और नाड्लाई स्थित शान्तिनाथ (पूर्वी वेदिबन्ध) मन्दिरों (पाली, राजस्थान, ११वीं शती ई०) की दो चतुर्भुज मूर्तियों की सम्भावित पहचान भी ब्रह्मशान्ति से की जा सकती है। यक्ष के हाथों में वरदमुद्रा, छत्र (या पद्म), पद्म और जलपात्र प्रदर्शित हुए हैं। इन मूर्तियों में वाहन का अङ्कन नहीं हुआ है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जलपात्र हैं। दोनों ही उदाहरणों में वाहन नहीं हैं। तीसरी मूर्ति रङ्गमण्डप से लगे वायव्य वितान पर उत्कीर्ण है (चित्र ४)। षड्भुज ब्रह्मशान्ति यहाँ त्रिभङ्ग में हैं। सुदीर्घ माला, हार, कुण्डल, यज्ञोपवीत एवं करण्डमुकुट से आभूषित, लम्बी दाढ़ी और मूँछोंवाले ब्रह्मशान्ति के वाम पार्श्व में हंस भी उत्कीर्ण है। यक्ष के दो हाथ वरद् और अभय में हैं और शेष में छत्र, पद्म, पुस्तक और जलपात्र धारण किया है। किञ्चित् बृहद्जठर यक्ष के दक्षिण और वाम पार्श्वों में आराधकों की स्थानक मूर्तियाँ निरूपित हैं। इन आराधकों के एक हाथ जयमुद्रा में ऊपर उठे हैं। इन आकृतियों के समीप दो चामरधारिणी बनी हैं। इनके दक्षिण और वाम पार्श्वों में क्रमशः ५ और ४ अन्य आकृतियाँ भी उकेरी हैं, जो सम्भवतः सेवकों की आकृतियाँ हैं। मूर्ति के दोनों छोरों पर हंस की पुनः दो मूर्तियाँ बनी हैं। इस प्रकार विमलवसही में ब्रह्मशान्ति के साथ हंस केवल एक उदाहरण में ही आकारित किया गया है, किन्तु करों में छत्र, पद्म एवं पुस्तक की उपस्थिति तथा यक्ष के श्मश्रुयुक्त और किञ्चित् घटोदर होने में एकरूपता है।

लूणवसही में ब्रह्मशान्ति की केवल एक ही मूर्ति मिलती है, जो रङ्गमण्डप से सटे अग्निकोण के वितान पर है (चित्र ५)। दाढ़ी-मूँछों, जटामुकुट, उपवीत एवं प्रलम्बमाला से युक्त षड्भुज यक्ष किञ्चित् घटोदर हैं। त्रिभङ्ग में अवस्थित यक्ष के दाहिने पार्श्व में हंस है। यक्ष के हाथों में वरदाक्ष, अभयमुद्रा, पद्म, स्रुक, वज्र और जलपात्र हैं। दोनों पार्श्वों में घट एवं मालाधारी सेवकों की चार आकृतियाँ हैं। इनके समीप हरबाजू अभयाक्ष और जलपात्र से युक्त चार अन्य पुरुषाकृतियाँ हैं। यज्ञोपवीत से युक्त ये आकृतियाँ सम्भवतः ब्राह्मण साधु हैं। विमलवसही की षड्भुज मूर्ति के समान यहाँ भी दोनों सिरों पर हंस की दो आकृतियाँ बनी हैं। विमलवसही और लूणवसही की मूर्तियाँ ब्रह्मशान्ति के निरूपण में पूरी तरह ब्राह्मण देवकुल के ब्रह्मा का प्रभाव दरशाती हैं। ब्रह्मशान्ति के साथ कई अन्य आकृतियों का अङ्कन-इन स्थलों पर उनकी विशेष प्रतिष्ठा का परिचायक है।

उमाकान्त शाह ने पाटण स्थित आदीश्वर मन्दिर एवं कुछ लघुचित्रों में ब्रह्मशान्ति के अङ्कन का भी उल्लेख किया है। आदीश्वर मन्दिर की मूर्ति में श्मश्रु और मूँछों से युक्त चतुर्भुज ब्रह्मशान्ति उपवीत एवं मुकुट से शोभित हैं और उनके हाथों में अक्षमाला, छत्र, पुस्तक और जलपात्र हैं।[1] जहाँ मूर्तियों में ब्रह्मशान्ति सर्वदा सौम्यमुख हैं, वहीं चित्रों में **निर्वाणकलिका** के निर्देशों के अनुरूप यक्ष को भयानक दर्शन वाला भी दिखाया गया है। छाणी ताड़पत्र-लघुचित्र में भयानक दर्शन वाले चतुर्भुज यक्ष के हाथों में पुस्तक, छत्र, स्रुक और वरद् प्रदर्शित हैं। ललितासनासीन यक्ष के समीप हंस भी अङ्कित है। पाटण से प्राप्त **कल्पसूत्र** के चित्रों में भी चतुर्भुज ब्रह्मशान्ति का अङ्कन हुआ है। यहाँ गजवाहन (?) वाले ब्रह्मशान्ति भद्रासनासीन और उपवीत तथा मुकुटमण्डित हैं। यक्ष के तीन करों में जलपात्र, दण्ड, छत्र हैं और एक हस्त प्रवचनमुद्रा में है।[2] संवत् १४७० (ई० १४१३) के वर्धमान-विद्यापट में चतुर्भुज ब्रह्मशान्ति का अत्यन्त रोचक अङ्कन हुआ है, जो ब्रह्मशान्ति यक्ष के निरूपण में ज्ञात परम्परा के स्थान पर जिनप्रभसूरि विवरणित "सत्यपुरतीर्थकल्प"का प्रभाव प्रतीत होता है, जिसमें ब्रह्मशान्ति को पूर्वभव में शूलपाणि यक्ष बताया गया है। "ब्रह्मशान्ति" अभिधानयुक्त इस चित्र में ललितमुद्रा में आसीन यक्ष का एक पैर वृषभ पर रखा है। यक्ष के तीन हाथों में प्रवचन,

१. शाह, यू० पी०, **पूर्वनिर्दिष्ट**, पृ० ६१-६२।

२. **वही**, पृ० ६१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्रिशूल और वरद् हैं। एक हाथ की वस्तु स्पष्ट नहीं है।[1] त्रिशूल और वृषभ जैन परम्परा के शूलपाणि यक्ष का स्मरण कराते हैं, जिसका स्वरूप, जैसा कि आगे कहा जा चुका है, शिव से प्रभावित रहा है।

इस तरह स्पष्ट है कि ब्रह्मशान्ति यक्ष ल० ९वीं-१०वीं शती ई० में जैन देवकुल (श्वेताम्बर) में सम्मिलित हुए। उमाकान्त शाह ने ब्रह्मशान्ति यक्ष के स्वरूप पर ब्रह्मा का प्रभाव स्वीकार किया है। किन्तु इस प्रसङ्ग में विचार करने पर स्पष्ट होता है कि ब्रह्मशान्ति का स्वरूप कभी स्थिर नहीं हो सका, यही कारण है कि साहित्यिक परम्परा और प्रतिमाङ्कनों में स्पष्ट अन्तर दृष्टिगत होता है। वाहन के रूप में हंस के साथ ही गज और वृषभ का अङ्कन भी उपर्युक्त धारणा का ही समर्थन करता है। उपलब्ध मूर्तियाँ कभी ज्ञात परम्परा का निर्वाह करती नहीं दीखती हैं। उमाकान्त शाह ने हंस तथा हाथों में पुस्तक और स्रुक के आधार पर ब्रह्मा का प्रभाव स्वीकारा है। साथ ही यह भी बताया है कि मारवाड़ और पश्चिम भारत में ब्रह्मोपासकों की प्रबलता के कारण जैन धर्म में ब्रह्मा के स्वरूप वाले यक्ष की ब्रह्मशान्ति के रूप में कल्पना की गयी।[2] पश्चिम भारत में ब्रह्मा की बिखरी हुई स्वतन्त्र मूर्तियों के अतिरिक्त अजमेर के समीप पुष्कर स्थित ब्रह्मा मन्दिर तथा उत्तरी गुजरात में खेड् ब्रह्मा मन्दिर भी ब्रह्मा की लोकप्रियता के साक्षी हैं। ब्रह्मा की इस लोकप्रियता के कारण ही जैनों ने मोढेरा, साचौर, देलवाड़ा, कुम्भारिया तथा कुछ अन्य स्थलों पर ब्रह्मशान्ति की मूर्तियाँ स्थापित कीं।[3]

ब्रह्मशान्ति के शास्त्रीय-स्वरूप पर विचार करने से उस पर ब्रह्मा से अधिक विष्णु के एक अवतार स्वरूप-वामन का प्रभाव स्पष्ट होता है। **निर्वाणकलिका** में जटामुकुट, पादुका और उपवीत से युक्त ब्रह्मशान्ति अक्षमाला, दण्ड, छत्र और कमण्डलु से युक्त हैं। ग्रन्थ में ब्रह्मा से सम्बद्ध पुस्तक, स्रुक और हंसवाहन तथा यक्ष के चतुर्मुख होने का अनुल्लेख है। दूसरी ओर **अग्निपुराण** एवं **वैखानस आगम** जैसे ग्रन्थों में वामन के करों में छत्र, दण्ड और पुस्तक के होने का उल्लेख है।[4] उपवीत धारित वामन को कभी-कभी लम्बोदर भी बताया गया है। ज्ञातव्य है कि ब्रह्मशान्ति के साथ श्मश्रु, जटामुकुट, हंसवाहन तथा करों में पुस्तक और स्रुक केवल शिल्पाङ्कन में ही प्रदर्शित हुआ है।

साहित्य और शिल्प दोनों में प्रारम्भ में ब्रह्मशान्ति का चतुर्भुज स्वरूप आलेखित हुआ

---

१. शाह, यू० पी०, **पूर्वनिर्दिष्ट** पृ० ६१।

२. **वही**, पृ० ६२-६३।

३. **वही**, पृ० ६२-६३।

४. छत्री दण्डी वामनः·····**अग्निपुराण** ४९.५।
छत्रदण्डधरं कौपीनवाससं शिखापुस्तकमेखलोपवीत-
कृष्णाजिनसमायुतं·····—**वैखानस आगम**
द्रष्टव्य, राव, टी० ए० गोपीनाथ, **एलिमेण्ट्स आव हिन्दू आइकानोग्राफी**, खण्ड १, भाग २, परिशिष्ट-सी, पृ० ३६; खण्ड १, भाग १, वाराणसी, १९७१ (पुनर्मुद्रित), पृ० १६३-६४; बनर्जी, जे० एन०, **दि डेवलपमेण्ट ऑव हिन्दू आइकानोग्राफी**, कलकत्ता, १९५६, पृ० ४१८।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

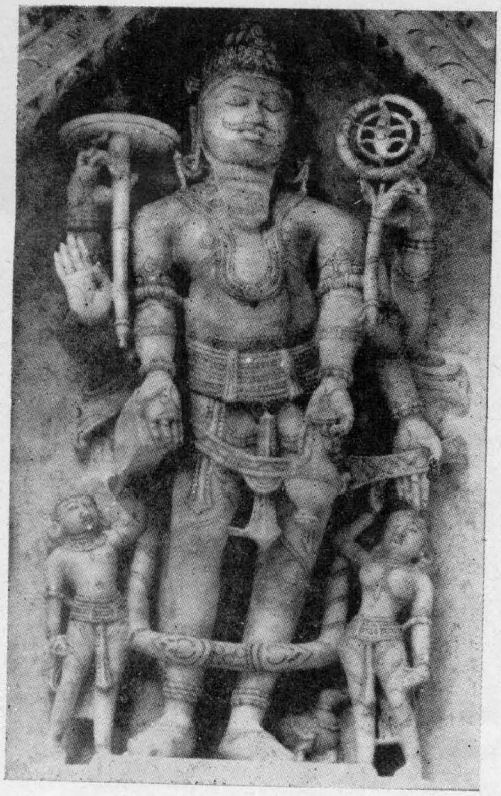

षड्भुज ब्रह्मशान्ति, रंगमण्डप से लगा वायव्य विकर्ण वित
विमलवसही, १२ वीं शती ई०

षड्भुज ब्रह्मशान्ति रंगमण्डप से लगा अग्निकोण का
विकर्ण वितान, लूणवसही १२३१ ई०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ब्रह्मशान्ति, दक्षिणभित्ति, पूर्वी जैन देवकुलिका, क्षोसियाँ, ११ वीं शती ई०

ब्रह्मशान्ति (दाएँ), पश्चिमी भ्रमिका वितान, महावीर मन्दिर, कुम्भारिया, ११ वीं शती ई०

ब्रह्मशान्ति (दाएँ), पूर्वी भ्रमिका वितान, शान्तिनाथ मन्दिर, कुम्भारिया, ११ वीं शती ई०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

है[1]। ब्रह्मशान्ति के षड्भुज स्वरूप की मूर्तियाँ १२वीं-१३वीं शती ई० में केवल देलवाड़ा के विमलवसही और लूणवसही में बनीं। साहित्यिक परम्परा जहाँ ब्रह्मशान्ति के निरूपण में केवल विष्णु के वामन स्वरूप का प्रभाव प्रदर्शित करती हैं, वहीं मूर्तियाँ ब्रह्मा और वामन स्वरूपों का समवेत प्रभाव दरशाती हैं। यह दूसरी बात है कि मूर्तियों में ब्रह्मा का प्रभाव अधिक मुखर है। हंस तथा करों में पद्म, पुस्तक, जलपात्र और दो उदाहरणों में स्रुक तथा श्मश्रु और मूँछों का प्रदर्शन स्पष्टतः ब्रह्मा के स्वरूप से प्रभावित है[2]। दूसरी ओर छत्र विष्णु के वामन-स्वरूप से अनुलक्षित है। पर मूर्तियों में ब्रह्मा के समान ब्रह्मशान्ति को कभी चतुर्मुख नहीं दिखाया गया। साथ ही **निर्वाणकलिका** के विवरण के अनुरूप कुछ चित्रों के अतिरिक्त ब्रह्मशान्ति को कभी भीषण दर्शन-वाला भी नहीं दिखाया गया है।[3] मूर्त उदाहरणों में ब्रह्मशान्ति के साथ पादुका[4] और दण्ड भी नहीं दिखाये गये हैं। इनके अतिरिक्त कुम्भारिया की मूर्तियों तथा पाटण से प्राप्त **कल्पसूत्र** के चित्रों में ब्रह्मशान्ति के साथ गजवाहन का अङ्कन भी किसी ज्ञात परम्परा से निर्देशित नहीं है। १४१३ ई० के वर्धमान-विद्यापट में ब्रह्मशान्ति का अङ्कन स्पष्टतः **विविध तीर्थकल्प** की शूलपाणि यक्ष की कथा परम्परा से प्रभावित है। यहाँ ब्रह्मशान्ति का निरूपण स्पष्टतः शिव से प्रभावित रहा है। इस प्रकार ब्रह्मशान्ति के निरूपण में न्यूनाधिक ब्राह्मण धर्म के तीनों प्रमुख देवों—ब्रह्मा, विष्णु, शिव—का प्रभाव देखा जा सकता है।

— व्याख्याता, कला-इतिहास विभाग,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-५

---

१. ब्रह्मशान्ति की द्विभुज मूर्ति का अकेला उदाहरण सेवाड़ी के महावीर मन्दिर के गूढ़मण्डप की उत्तरी भित्ति पर आलेखित है। श्मश्रु और पादुका से युक्त यक्ष के दाहिने हाथ में अक्षमाला और बायें में जलपात्र हैं। द्रष्टव्य, ढाकी, एम० ए०, **पूर्वनिर्दिष्ट**, पृ० ३३७-३८।

२. **बृहत्संहिता** ५७.४१; **मत्स्यपुराण** २५९.४०-४४ (मत्स्यपुराण में ब्रह्मा के एक बायें हाथ में दण्ड का भी उल्लेख हुआ है); **रूपमण्डन** २.६-७।

३. छाणी ताड़पत्र-लघुचित्र।

४. सेवाड़ी के महावीर मन्दिर की मूर्ति अकेला अपवाद है।

चित्र-सूची

चित्र—१: ब्रह्मशान्ति, दक्षिणभित्ति, पूर्वी जैन देवकुलिका, ओसियाँ, ११वीं शती ई०।

चित्र—२: ब्रह्मशान्ति (दाएँ), पश्चिमी भ्रमिका वितान, महावीर मन्दिर, कुम्भारिया, ११वीं शती ई०।

चित्र—३: ब्रह्मशान्ति (दाएँ), पूर्वी भ्रमिका वितान, महावीर मन्दिर, कुम्भारिया, ११वीं शती ई०।

चित्र—४: षड्भुज ब्रह्मशान्ति, रंगमण्डप से लगा वायव्य वितान, विमलवसही, १२वीं शती ई०।

चित्र—५: षड्भुज ब्रह्मशान्ति, रंगमण्डप से लगा अग्निकोण वितान, लूणवसही, १२३१ ई०।

आभार-प्रदर्शन

चित्र २, ३ अमेरिकन इन्स्टिट्यूट ऑव इण्डियन स्टडीज, वाराणसी तथा चित्र ४ आर्कियलाजिकल सर्वे ऑव इण्डिया, दिल्ली के सौजन्य से साभार।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org